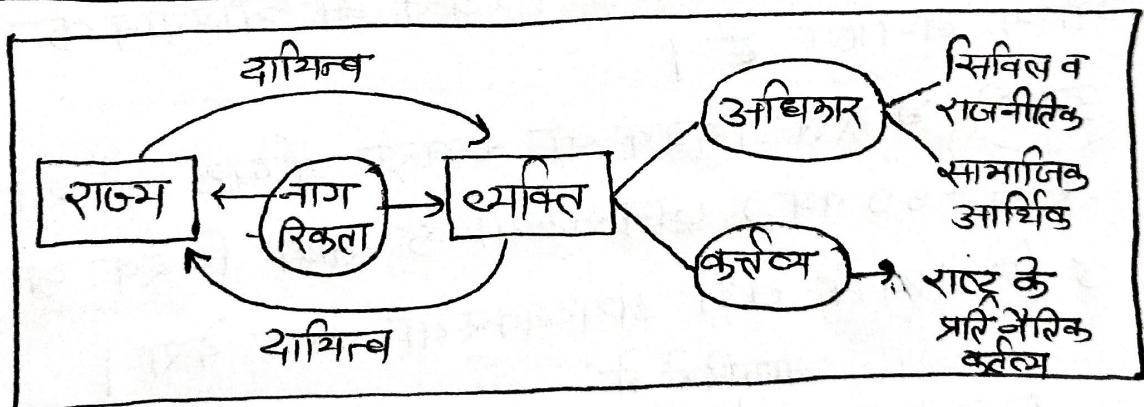


① भारत में नागरिकता किस प्रकार राष्ट्र-निर्माण के साधन के क्षेत्र में कार्य करती है इसका परीक्षण कीजिए। यह विभिन्न समुदायों की पूरी और सामाजिक आगीकरण सुनिश्चित उन्नति में क्यों विफल रही है? संविधान संविधानिक प्रावधानों और हालिया विभासों के साथ अपेक्षा कीजिए। (38marks)

नागरिकता एक ज्ञानूनी औपचारिक स्थिति है जो व्यक्ति को राज्य के सामाजिक, आर्थिक व राजनीतिक अधिकारों में आगीकरी हेतु अधिकार प्रदान करती है। भारतीय संविधान एकल नागरिकता का प्रावधान करता है जिसकी दृष्टिकोण राष्ट्र-निर्माण में अहवापूर्ण है।

भारत में नागरिकता राष्ट्र-निर्माण के साधन के क्षेत्र में : कैसे ?



② राज्य व व्यक्ति के अहम सामाजिक अनुबंध

→ राज्य की 'भारत के लोग' द्वारा प्रदात व्यक्ति व राज्य द्वारा नागरिकों को ज्याम स्वतंत्रता व समता की गाँदरी

(उदाहरण) भारत में राज्य व सरकार का अनुचित

जेनल डारा प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से स्कु  
निश्चित अवधि के लिये बुना जाता है राज्य डारा  
कर्तव्य वा निवृत्त न करने की दशा में जेनल  
अपने प्रतिनिधि को बदलने के लिये अवलम्बन है।

② राज्य डारा नागरिकों की सिविल व राजनीतिक  
अधिकारों की गाँदरी (मीलिक अधिकार)

- ① सभता का अधिकार अनुच्छेद - 14
- ② स्वतन्त्रता का अधिकार - अनुच्छेद - 19
- ③ जीवन का अधिकार - अनुच्छेद - 21

इस प्रमुख अधिकार प्रतिक्रिया की स्वर्ण की  
विभिन्न करने के साथ राज्य की सामाजिक  
आर्थिक व राजनीतिक विकास एवं औगदान के  
भीम बनाता है।

(उदाहरण) भारत विश्व की सबसे अधिक गर्भाशील  
(15-59 वर्ष) जनसंख्या के साथ विश्व की  
5वीं सबसे बड़ी आर्थिक विकास वाला देश।  
नागरिकों को

③ राज्य डारा प्रदाता सामाजिक - आर्थिक अधिकार  
(राज्य के नीति निर्देशन तथा)

- ① कमज़ीर कर्मों के उत्पादन हेतु प्रपात  
अनुच्छेद - 39, 43, 46
- ② राज्य के नीति निर्माण के मीरस कम्पास  
की तरह

राष्ट्र निर्गम  
में सहभाग  
के सुनिश्चित

① सामाजिक विकास

② आर्थिक बाई की पारनी में

③ सकारात्मक धोदमाप के बाह्यम  
भाषण सुनिश्चित करने में

④ कर्तव्यों के आह्याय से नागरिकों के भौतिक  
कामित्व की सुनिश्चित बरना (अनुच्छेद - 51(A))

↳ भारतीय संविधान का सम्मान व श्रद्धा  
का पालन

↳ राष्ट्रीय शांति व सीलन की प्रयाप्ति अर्ते

↳ राष्ट्र की एकत्र व अस्थिरता की सुनिश्चित करने में

↳ धर्मनिरपेक्ष राज्य के विविधता में  
एकता प्रयाप्ति करने हेतु

विभिन्न समुकामी की पुर्ण और समान धार्मिकी  
सुनिश्चित करने में विफल क्यों?

① श्रीत्रीय असमानता

↳ उत्तरपूर्व राज्य का मुख्य भारत से अलग  
- अलग रहना (असम में NRC का भुइया, जागा  
डारा अलग राज्य की भाँग)

② आर्थिक असमानता

↳ Oxfam की रिपोर्ट के अनुसार भारत  
के 2% लोगों के पास 40% समस्ति का

संकेत-प्रणाली → आर्थिक असमानता नागरिकों की  
राज्य की गोजनाओं तक पहुँच सीमित कर देती है।

### ③ ऐगिड असमानता-

केवल ३७% गहिलामों की देश की  
आर्थिकी में आगीकारी

### ④ उनिटर औप

बहुत लकड़ीकी प्रयोग उद्ध कर्मों की  
सीमित पहुँच नागरिकों की एक छट्टे कर्मों लाभ  
से वंचित रखती है।

### नागरिकता सम्बन्धित प्रावधान व लालिपा विभास

① भारतीय संविधान भाग - 2 में अनुच्छेद  
5-11 लकड़ी नागरिकता सम्बन्धी प्रावधान करता है।

② नागरिकता के क्रियान्वयन हेतु संसद  
द्वारा बनाए गए गान्धीनी प्रावधान  
→ नागरिकता अधिनियम 1955  
→ नागरिकता संशोधन 1986 < 2003

③ नागरिकता की अजबूली प्रदान करते हैं

मूलअधिकार

↓

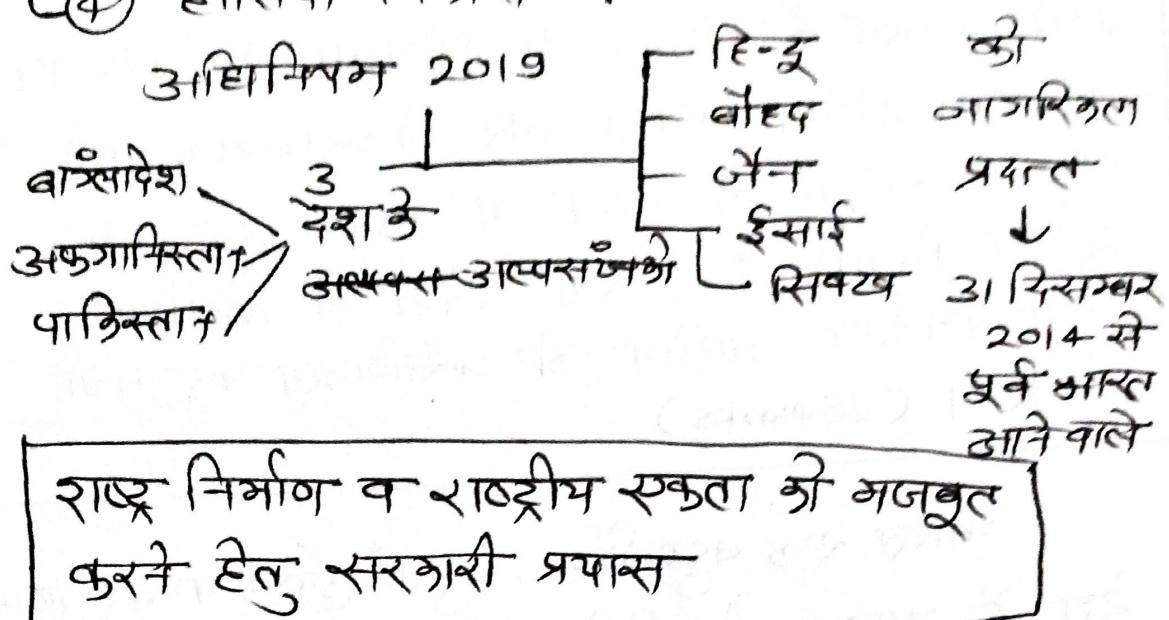
अनुच्छेद - 12-35

मूल उर्त्तिव्य

↓

अनुच्छेद - 51A

④ दौलिपा विकास → नागरिकता संशोधन



- ① — ₹५० राष्ट्र एक चुनाव  
संसाधनी की वचत व सामाजिक इजाजी का सदुपयोग
- ② — समान नागरिक संटिता  
सभी घर्मी भी समानता व राष्ट्रीय एकता के लिए समर्पित करना
- ③ — अधिल भारतीय सेवा
- ④ — वन वीशन वन राशन कार्ड
- ⑤ — आधार कार्ड द्वारा आम आदमी की राष्ट्रीय पहचान प्रदान करना।

इस प्रकार नागरिकता जहाँ ₹५० तरफ ₹५० में की विकसित करने हेतु भवतर प्रदान करता है वही राष्ट्र निर्माण में शोधना हेतु न्याय, समता, समर्पिता के आद्यम से राष्ट्र की एकता व अखिंडता की भी सुनिश्चित करता है।

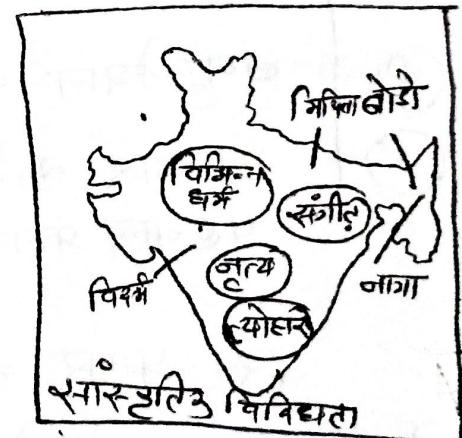
② भारत में सांस्कृतिक विविधता किस प्रकार राज्यों की तुलना में छोटी की अधिक अजूबत सांस्कृतिक इकाई बनाती है इसका समालोचनात्मक विश्लेषण कीजिए। छोटीग वर्चना और विकासात्मक दृष्टि ने नए राज्यों के गठन में किस तरह तक धूमिका नियार्थ है? इस संदर्भ में द्वितीय राज्य पुनर्गठन आयोग की प्रासंगिकता पर चर्चा कीजिए। (38marks)

भारत स्कूल विद्यार्थिक, बहुसांस्कृतिक व बहुजातीय देश है भारत की विविधता के कारण इसके 'सपाद के कोरोना' की संका दी जाती है जो भारत की विविधता में एकता का प्रदर्शन करता है।

**राज्य की तुलना में छोटा अधिक अजूबत सांस्कृतिक इकाई क्यों?**

मारत में राज्यों का गठन प्रशासनिक, भाषाभी व उनके स्थितिज्ञ आधार पर किया गया था।

(उदाहरण) आंध्रप्रदेश भाषाभी आधार पर गठित होने वाला राज्य



छोटीग स्तर सांस्कृतिक विविधता में सीति रिवाज, योहर, संगीत आदि उल्लेखनीय

मेरी समानता प्रदर्शित करती है जो उन्हें न केवल सांस्कृतिक रूप से अपिलु आवनामक रूप से जोड़ती है।

**(उदाहरण)** बिहार में गियिला, भसराष्ट्र में विदर्गि उठप्र० में बुदेलखण्ड आदि द्वितीय स्तर पर गण्डुत सांस्कृतिक रूपाई का उदाहरण है।

राज्य	क्षेत्र
① देश की इकाई ↓ बुद्धत द्वित्रे में विस्तर भारत में 28 राज्य	राज्य की भौतिक इकाई उठप्र० में बुदेलखण्ड, बछेलखण्ड, बिहार में गियिला में राजस्थानी
② देश की इकाई → प्रशासनिक सुविधाओं के आधार पर विभाजन	सांस्कृतिक आधार पर फल्तु राजकीय हस्तक्षेप की आवश्यकता नहीं।
③ भावनामक के सामाजिक पर लेर पर नम भुडाव	④ अधिक जुड़ाव

द्वितीय वर्चना और विभासामन खाटे ने नए  
राजकीय के गठन में मुमिला

→ भारत में ३०प्र०, बिहार, अ०प्र० का विभाजन  
क्षेत्रीय वर्चना व विकासात्मक छोटे के कारण  
क्रमशः उत्तराखण्ड, झारखण्ड व छत्तीसगढ़ पेसे  
राज्यों का गठन हुआ।

→ राज्य पुर्णिगठन आयोग १९५६ द्वारा भारत  
की १४ राज्य व ६ उन्नत्यासित प्रदेशों  
को बांटा जो वर्तमान में प्रश्न क्षेत्रीय  
वर्चना, विकासात्मक छोटे के प्रशासनिक सुविधाओं  
के आधार पर २४ राज्य व ४ उन्नत्यासित  
प्रदेशों के विभाजन किए गये हैं।

### हिन्दी राज्य पुर्णिगठन आयोग की प्रारंभिकता

① — विभिन्न राज्यों के अन्दर क्षेत्रीय स्तर  
पर असर राज्य व स्वायत्ता की  
माँग

(उदाहरण) अगालेंड में नागा समुदी छात्र  
उसमें में बोडीलैंड की माँग, लड़दाख-  
ठारा चंप राज्य की माँग डाक्टि धरियां  
क्षेत्र में गोरुजालेंड  
बड़ी जूनसल्ल्या व राज्यों में बड़ला  
जानाया जाता

② — (उदाहरण) दिल्ली बहु ॥ हजार से अधिक

## जनसंख्या धाराव

- (3) प्रशासनिक दक्षता की सुचारू
- (4) श्रीत्रीप्र सिंहजी की कम ग्रन्ति
- (5) संसाधनी के उचित बटवारे

## सीमाएँ

- (1) प्रशासनिक भर्तीनी की आवश्यकता अधिक  
**उद्घाटन** अधिक प्रशासनिक अधिकारियों की आवश्यकता
- (2) वित्तीय संरक्षण पर अधिक भार
- (3) श्रीत्रीप्र स्लर असग राज्य व २३५८८ की  
मांग बढ़ानी

## सुझाव

- (1) सारंगुलिक विविध लोगों प्रीत्याहित छर्ने  
**उद्घाटन** श्रीत्रीप्र शीरि रिवाल, गोदार डाक्टर की  
वडावा
- (2) पश्चिम बगांल के दुर्गापुरां गुजरात  
के गरबा डाक्टर के सारंगुलिक धरोद  
के दफ्तर से दसे वडावा निलेगा।
- (3) भाष्टेदरी के जाह अस्तित्व की वडावा देना
- (4) धार्मिक सोलाई की वडावा

इस प्रकार भारत की विविधता के बावजूद  
भूकला के अवधिता के आदर्श इस विभिन्न  
धर्म, जाति, लिंग, रीति-रिवाज आदि से सम्बन्ध  
के इन्हीं प्रोत्त्वादेश-भूगोल गतिसंग्रही एवं  
एवं १९४७ की अवधिता की अनुच्छेद एवं  
एवं इन्हीं भूकला की बढ़ावा दिलाया।

③ भीमराव अंबेडकर ने भारत में 'विरोधाभासी के जीवन को हल करने के सिमे स्वतन्त्रता, समानता, और बंधुत्व की 'त्रिमूर्ति' की कल्पना की थी। सामाजिक असमानता, राजनीतिक धूपीकरण और आर्थिक विषयों जैसी समस्याएँ नुनीतियों के समाधान में इस दृष्टि की प्राचीनिकता वा समालोचनात्मक विश्लेषण श्रीजिए।

भारतीय संविधान की कुंजी के क्षण में वर्णित प्रेरणावाना छारा नागरिकों को स्वतन्त्रता, समानता व बंधुत्व के आधार से सामाजिक, आर्थिक व राजनीतिक व्याप्र प्रदान करने की स्फूर्तिपना की गयी है जिसे भीमराव अंबेडकर छारा त्रिमूर्ति की संज्ञा की गयी।

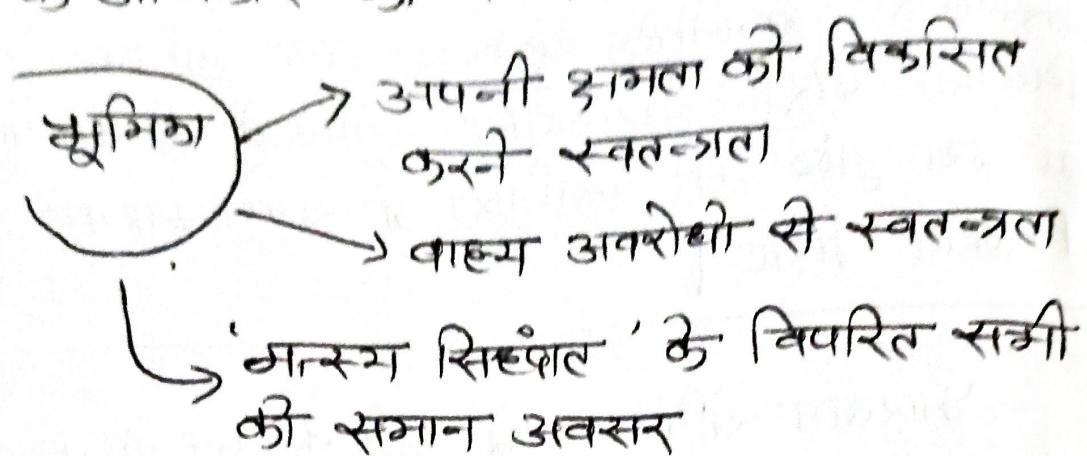
'विरोधाभासी के जीवन' को हल करने में स्वतन्त्रता, समानता और बंधुत्व की धूमिका (त्रिमूर्ति)

④ स्वतन्त्रता की धूमिका

→ स्वतन्त्रता बिना अनुचित प्रतिवर्षों के विचार, अग्रिम्यकित व कार्य करने की स्वतन्त्रता ही है।

→ भारतीय संविधान में 'वैभविक स्वतन्त्रता'

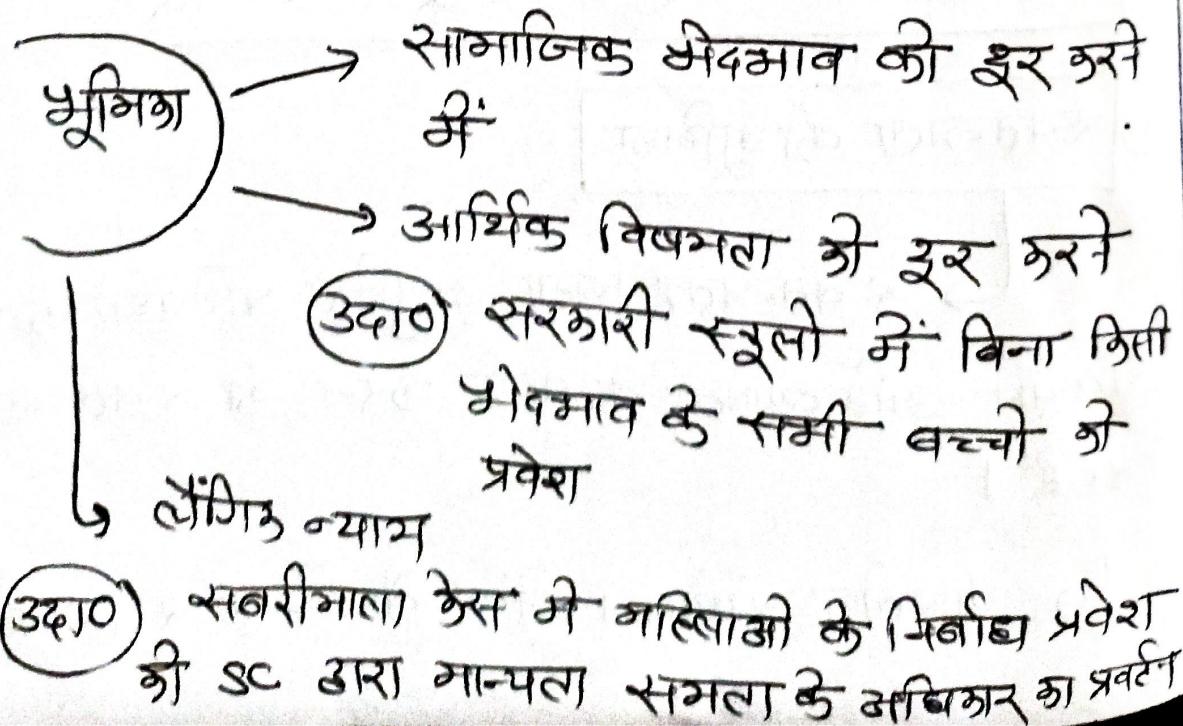
को सुनिश्चित करने हेतु संविधान के आग - ३ अनुच्छेद १९ - २२ तक स्वतंत्रता के अधिकार का बीन है।



### समानता की भूमिका

सभी व्यक्ति की समान अधिकार प्रदान करना - यह उनकी सामाजिक, आर्थिक व राजनीतिक पृष्ठभूमि कुछ भी ही

भारतीय संविधान के आग - ३ और अनुच्छेद १४ - १८ समला के अधिकार का बीन है।



## वन्धुत्व की भूमिका

व्यक्तिगत व समुदायी के बीच  
आपसी रुक्तता व सम्मान को बढ़ाता है।

→ भारतीय संविधान में धर्म-स्वतंत्रता व  
समता के आदर्श भाईचारे की भावना की  
प्रीत्साहित करते हैं।

भूमिका

सामाजिक शांति व सीधार्दि  
स्थापित करने

सरकार की नीति व नीजनाली  
के सफल बनाने के

सभी की स्वर्ग के विकसित करने की  
देश बालाकरण प्रदान करना।

सामाजिक उसमानता, राजनीतिक ध्वनीकरण  
व आर्थिक विषयता जैसी चुनौतियों से  
निपटने में **त्रिमूर्ति** की भूमिका

सामाजिक उसमानता	राजनीतिक ध्वनीकरण	आर्थिक विषयता
① आतिगत भैदभाव, लैगिंड उसमानता , साम्प्रदायिकता सम्बद्धी चुनौतियाँ	① चुनावों में धर्म का जाति के नाम पर राजनीतिक दलों हारा वोट की	① आर्थिक बाई  उदाहरण भारत में 1% लोगों के पास 40% सम्पत्ति के सह-द्रष्टा

(३) अहिलामो  
की भारत की  
आर्यव्यवस्था  
में ३१% हिस्सेदार  
लेंगिक जनसमाज  
की विभिन्नता  
है।

(२) अप्पसंघको  
की असुरक्षा  
की जावना

राजनीति  
(३) - नुनामो के  
दलितों को सुमाने  
वाले वादे

(२) क्रीबीज,  
अप्पकासीन वादे  
के प्रति जनता  
का झुकाव  
(३) राजनीतिक  
भाक्षरता की  
उभी

(२) सार्वजनिक  
सेवामो तक  
सीमित पहुँच

(३) शिक्षा जैसे  
मौलिक अधिकारों  
से वंचित

(४) रोटी, छपड़ा  
जैसी बुनियादी  
दामरक्षण  
तक सीमित  
पहुँच

नुनोलियों से निपटने में त्रिभुवि की चुनिया  
व प्रासादिगत

(५) स्वतन्त्रता का अधिकार विभिन्न की किसी  
भी धर्म, जाति को अपनाने व रीतिरिपाली  
का पालन करना का अधिकार प्रदान करता है

(३) भैनका गांधी १९८० भारत सरकार के सभी  
(१९८४) में किसी भी स्थान पर जाने की  
स्वतन्त्रता की जीवन के अधिकार के शामिल  
किए गए जो शास्त्र की स्वतंत्रता की सीमित  
बहुत है। ~~साथ आमाधिक भा।~~

(२) समता का अधिकार विभिन्न की

अतदान का अधिकार, किसी भी पार्टी  
की नुनाने व राजनीतिक आड़ीदारी की  
समता स्वतन्त्रता के अधिकार के भाष्यम्

राजनीतिक धूनीकरण से सुरक्षा प्रदान करता है।

② **संगत वा अधिकार** निश्चेष्ट सामाजिक व आर्थिक परिस्थिति वाले लोगों से कुपलोक कर्मों को सुरक्षा प्रदान करता है।

(उदाहरण) इवेंटिटी बिफोर लॉ ट्रेन इवेल प्रोटोकॉल आएँ लॉ व्यक्ति की आर्थिक विषमता व सामाजिक असमानता ऐसी चुनीयितों से निपटने में सहायता प्रदान करता है।

③ **वधुत्व के आदर्श**

मृ धाईचारे की भावना आर्थिक, सामाजिक व राजनीतिक शोषण की रोकने व 'इत्याणगारी शज्ज्य' की नीतियों के पारदर्शी व सफल क्रियाकला के प्रभुत्व धूमिका निभाता है।

(उदाहरण) कोरोना ट्राल में कुछ बड़ी अस्थिरी हरा प्रवासी अजदूरी की भेजन व आर्थिक सहायता प्रदान करना अम्बेडकर जी के त्रिभुति भाद्री के वधुत्व के आदर्श को चरितार्थ करता है।

इस प्रकार समावेशी विकास व गांधी जी के 'रामराज्य की संकल्पना' की पूर्ण करने भारत के 2047 के लक्ष्यों की पूर्ण करने में अम्बेडकर जी की [त्रिभुति] की धूमिका अहत्पूर्ण है।